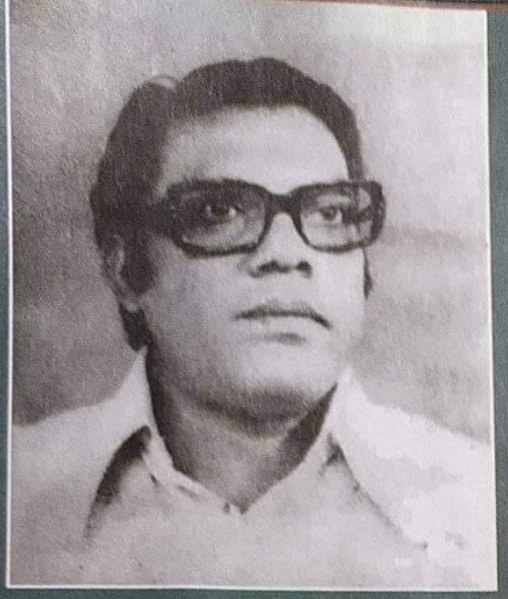

छत्तीसगढ़ के 20वें राज्यस्थापना दिवस समारोह, राज्योत्सव-2019 के अवसर पर छत्तीसगढ़ को राज्यगीत की सौगात मिली। प्रख्यात लोककवि डॉ. नरेन्द्रदेव वर्मा द्वारा लिखित इस छत्तीसगढ़ी गीत को माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल द्वारा राज्यगीत घोषित किया गया। छत्तीसगढ़ राजपत्र (असाधारण) क्रमांक 774 दिनांक 18 नवंबर 2019 को तदाशय की अधिसूचना क्रमांक एफ 10-11/2019/1/5 द्वारा जारी की गई।

अरपा पैरी के धार ...

डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

जिन्होंने रचा राज्यगीत

'अरपा पैरी के धार महानदी हे अपार'' के रचयिता बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा का जन्म सेवाग्राम (वर्धा) में 4 नवम्बर 1939 को हुआ था।

उन्होंने सागर विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा प्रयोगवादी काव्य और साहित्य चिंतन पर पी.एच.डी. की। 1973 में पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय से भाषा विज्ञान में दूसरी बार एम.ए. तथा ''छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्‌भव व विकास '' पर पुनः पी.एच.डी. की। वे कवि, नाटककार, उपन्यासकार, कथाकार, समीक्षक एवं भाषाविद् थे। उन्होंने हिन्दी और छत्तीसगढ़ी में समान रूप से अमूल्य कृतियों का सृजन किया।

हिन्दी साहित्य के गहन अध्येता होने के साथ ही उन्होंने अपनी साहित्य साधना से छत्तीसगढ़ की अस्मिता का सृजन भी किया। कुशल वक्ता, गंभीर प्राध्यापक, भाषाविद् तथा संगीत मर्मज्ञ गायक भी थे। बड़े भाई ब्रम्हलीन स्वामी आत्मानंद जी का प्रभाव उनके जीवन पर बहुत अधिक पड़ा था। 40 वर्ष की अल्पायु में 8 सितंबर को उनका महाप्रयाण हुआ। डॉ. वर्मा को छत्तीसगढ़ी संस्कृति को गढ़ने वाले महान पुरोधा के रूप में याद किया जाएगा।

''अरपा पइरी के धार महानदी है अपार,
इन्द्रावती ह पखारय तोर पईया।
महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तिसगढ़ मइया।।
सोहय बिन्दिया सही घाते डोंगरी, पहार
चन्दा सुरूज बने तोर नयना,
सोनहा धाने के संग, लुगरा के हरियर रंग
तोर बोली जइसे सुघर मइना।
अँचरा तोरे डोलावय पुरवइया।।
(महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तिसगढ़ मइया।।)
रइगढ़ हाबय सुघर तोरे मँउरे मुकुट
सरगुजा (अऊ) बेलासपुर हे बहियाँ,
रइपुर कनिहा सही घाते सुग्घर फभय
दुरुग, बस्तर सोहय पयजनियाँ,
नाँदगाँवे नवा करधनियाँ
(महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तिसगढ़ मइया।।)

(राज्य गीत- डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा की हस्तलिखित पांडु

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA